Vol III Issue I July 2013

Impact Factor : 1. 2018 ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1. 2018

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-1, July-2013

'' आदिवासी भिलाली और बारेली बोलियों में क्रिया रूप का अध्ययन ''

रजनी सोलंकी
पी–एच.डी. शोधार्थी– हिन्दी साहित्य
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर–म.प्र.(भारत)

शोध सारांश : भिलाली एवं बारेली बोली म.प्र. के लघु क्षेत्र में आदिवासियों के द्वारा बोली जाने वाली अत्यंत ही सशक्त लोकभाषा हैं। लोक भाषाएँ सहायक नदी की तरह होती हैं, इसका राष्ट्र में बहुत ही योगदान रहता हैं। यदि राष्ट्रभाषा समृध्द होती हैं। आदिवासी जीवन में आत्मसात होने के कारण वे अपने मूल किनारो पर बसने वाली जनता की सभ्यता, संस्कृति और विपुल शब्द संपदा से राष्ट्रभाषा को समृध्द करती आयी हैं। ये बोलियां निमाड़ मालवा, और नर्मदा के उत्तर में बोली जाने वाली सामान्य हिन्दी के साथ मराठी, भीली, राजस्थानी, गुजराती और फारसी शब्दों का एक मिश्रण हैं। आदिवासी भिलाला की उरपा भिलाली एवं ढापला भिलाली बोली और बारेला की तीन बोलियाँ राठ्वा बोली, पाल्या बोली, एवं बारला बोली होती हैं। भिलाली में हिन्दी के समान ही जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय वह क्रिया रूप होता हैं। हिन्दी में प्रत्येक क्रिया के मूल स्वरूप में ना शब्द लगा होता हैं। उसके स्थान पर उरपा भिलाली बोली में नो, णु या णो लगा होता हैं। तथा ढापला भिलाली बोली में नु या णु लगा होता हैं। ढापला भिलाली बोली में न के स्थान पर ण का प्रयोग होता हैं। पूर्व निमाड़ के खण्डवा तथा उससे लगे हुए हरदा, हरसुद क्षेत्र में रहने वाले भीलाला आदिवासी में कौन को कौण बोला जाता हैं।

इसी प्रकार बारेली में हिन्दी के समान ही जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय वह क्रिया रूप होता हैं। हिन्दी में प्रत्येक क्रिया के मूल स्वरूप में ना शब्द लगा होता हैं। उसके स्थान पर बारेली राठ्वा बोली में नो या णो बारेली पाल्या बोली में वु या वा लगा होता हैं। बारला बोली में नो या णु लगा होता हैं। बारेली, राठ्वा, एवं बारला में न को ण उच्चारित किया जाता हैं। जैसे कौन – कुण, तथा पाल्या बोली में न के स्थान पर य तथा व का प्रयोग होता हैं। जैसे – कौन का कोय, कहना का केवु, बुलाना का बोलावु आदि।

कुंजी शब्द – उरपा भिलाली, ढापला भिलाली, राठ्वा बोली, पाल्या बोली, बारला बोली बोली एवं क्रिया रूप।

प्रस्तवाना –

भिलाली की उरपा भिलाली बोली एवं बारेली की राठ्वा बोली, पाल्या बोली तथा बारला बोली मुख्य रूप से म.प्र. के खरगोन, बड़वानी, धार, झाबुआ, खण्ड़वा, अलिराजपुर आदि जिलो में बोली जाती हैं। जबकि ढापला भिलाली बोली म.प्र. के पश्चिमी क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण बोली हैं। जिसमें खण्डवा, खरगोन, बड़वानी, धार, हरदा, आदि जिलो में स्थानीय प्रभाव के साथ ही बोली जाती हैं। भिलाली और बारेली अपनी प्रवृति में सामंजस की बोली हैं। विविध बोलियों को उदारता के साथ समाहित करने की शक्ति हैं। भिलाली एवं बारेली बोली अनेकों भाषाओं को पहचानकर अपने में मिलाने की क्षमता हर समय रही हैं। लोक जीवन के सारे क्रियाकलापो का वह साक्षी होती हैं। इसकी वाणी भी लोक अनुभूतियों का बेबाक बयान बोली में करता हैं। लोग उसकी उँगली पकड़कर साहित्य के पथ पर चलते हैं। और लड़खड़ाहट के क्षणों में बहुत गहरे स्तर पर बोली संभलती भी हैं। अतः बोली भी अपने मूल में प्राकृत, सहज, सीधी, सरल और आत्मीय होती हैं। जातीय स्मृति और स्वप्न की समस्त कमनीयता और सहनीयता भिलाली बोली की वाचिक विधाओं में पारंपरिक रूप से मौजूद हैं। लोक कंठो में शताब्दियों से विराजमान भिलाली एवं बारेली का लोक साहित्य गाँव के लोगों में समाहित हैं। जो विभिन्न अवसरों पर लोगों के समक्ष खुलता हैं।

उरपा भिलाली बोली एवं बारेली बोलियों की वाचिक परम्परा पर आज तक कोई काम नहीं हुआ और न हीं उनके स्वरूप पर कभी चर्चा हुई। इन बोलियों को शोध संकलन और संरक्षण की आवश्यकता हैं।

उरपा भिलाली बोली एवं राठ्वा बारेली बोली की तुलना–उरपा भिलाली बोली बारेला की राठ्वा बोली के समान ही हैं। इसमें बहुत कम अंतर होता हैं। जब कभी हम उरपा भिलाली (राठ्या) बोली को सुनते हैं, तो बारेली राठ्वा एवं उरपा भिलाली में एक दम से अंतर नहीं कर पाते हैं। फिर भी इन दोनों भाषाओं में अंतर तो हैं, जैसे –

	उरपा भिलाली	बारेली राठ्वा	हिन्दी
समानता –	काय	काय	क्या?
	कुण	कुण	कौन?
	कुणीक	कुणीक	किसे?
	कोत्यार	कोत्यार	कब।
असमानता –	तुखे	तुछेक	तुझे
	मेखेक	मेछेक	मुझे
	हामु	आमु	हम

भिलाली बोली का भाषिक स्वरूप –

भिलाली बोली में में न के स्थान पर ण का प्रयोग होता हैं। जैसे – कौन आया, तो उरपा भिलाली में अर्थात राठ्या बोली में यह बोला जायेगा –कुण आयो। उरपा भिलाली में संबोधन में तु का प्रयोग होता हैं, तथा बड़े और सम्मानीय व्यक्तियों के लिए तुंहु का प्रयोग होता हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली –	तुंहु काई खावु ?	***हिन्दी*** – आप क्या खा रहे हैं ?
	तुंहु कां जावु ?	आप कहाँ जा रहे हो ?
	तु काई कोरे ?	तुम क्या कर रहे हो ?

ढापला भिलाली बोली में न के स्थान पर ण का प्रयोग होता हैं। यह बोली पूर्व निमाड़ के खण्डवा तथा उससे लगे हुए हरदा, हरसुद क्षेत्र में रहने वाले भीलाला जनजातिय कौन को कौण बोला जाता हैं, जैसे –

ढापला भिलाली बोली –	यो कोण आयो?	***हिन्दी*** –यह कौन आया?
	ई कुण आया?	ये कौन आया?

इसमें संबोधन में तु का प्रयोग होता हैं। बड़ो एवं सम्माननीय व्यक्तियों के लिए तम बोला जाता हैं। जिसका अर्थ आप होता हैं। माता–पिता, पति–पत्नी, काका–काकी, आदि को तक तु से ही संबोधित किया जाता हैं। जैसे – कारे दाजी तु कां गयो थो ? ढापला भिलाली में मखऽ, तुखऽ, तुकऽ आदि बोलना प्रचलित हैं। सामान्यतः तु संबोधन सार्वजनिक हैं। दूसरो को सुनकर बुरा लग सकता हैं लेकिन ढापला भिलाली के लिए यह शब्द अच्छा लगता हैं। इसमें मिठास हैं, अपनत्व हैं।

भिलाली बोली में क्रिया रूप –

भिलाली में हिन्दी के समान ही जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय उसे क्रिया रूप कहते हैं। हिन्दी में प्रत्येक क्रिया के मूल स्वरूप में ना शब्द लगा होता हैं। उसके स्थान पर उरपा भिलाली बोली में नो, णु या णो लगा होता हैं तथा ढापला भिलाली बोली में नु या णु लगा होता हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली	***ढापला भिलाली बोली***	***हिन्दी***
रोड़नो	रड़नु	रोना
चालणो	चालणु	चलना
सुवणो	सोवणु	सोना(निंद लेना)
गावणो	गावणु	गाना
खेलणो	खेलणु	खेलना
भोंढ़णो	भंणणु	पढ़ना
हॉसणो	हासणु	हँसना
पीणो	पीणु	पीना
खाणो	खाणु	खाना
जाणो	जाणु	जाना
कोमायणो	कमायणु	कमाना
आवणो	आवणु	आना

भिलाली में रचना की दृष्टि से हिन्दी के समान ही क्रिया के भेद दो हैं –

(१)सकर्मक क्रिया (२)अकर्मक क्रिया

(१) सकर्मक क्रिया – जिस क्रिया का कर्म हो वह सकर्मक क्रिया कहलाती हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली–मोहन गुण्डु खेले। ***हिन्दी***–मोहन गेंद खेलता हैं।
चुं भोंणे। वह पढ़ता हैं।

ढापला भिलाली बोली –वा भंणऽ। ***हिन्दी***–वह पढ़ता हैं।
मोहन गेंद खेले। मोहन गेंद खेलता हैं।

उरपा भिलाली बोली में गुण्डु खेले। में खेल क्रिया का कर्म गुण्डु हैं। इसी प्रकार से ढापला बोली में गेंद क्रिया का कर्म हैं। अतः यह सकर्मक क्रिया हैं। सकर्मक क्रिया वही होगी जिसमें '' क्या '' का उत्तर मिल जाय।

(२) अकर्मक क्रिया– हिन्दी के समान ही भिलाली में भी जिस क्रिया का कोई कर्म ना हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली – राम सुवे। ***हिन्दी***–राम सोता हैं।

इसमें सुवे क्रिया अकर्मक हैं। राम कर्ता हैं, सुवे की क्रिया उसी के द्वारा पूर्ण होती हैं। अतः सुवे का फल भी उसी पर पड़ता हैं। इसलिए सुवे क्रिया अकर्मक हैं, जैसे –

ढापला भिलाली बोली– राम सोव। ***हिन्दी***–राम सोता हैं।
श्याम रड़ऽ। श्याम रोता हैं।

इसमें रड़ऽ क्रिया अकर्मक हैं श्याम कर्ता हैं, रड़ऽ की क्रिया उसी के द्वारा पूर्ण होती हैं। अतः रड़ऽ का फल भी उसी पर पड़ता हैं। इसलिए रड़ऽ क्रिया अकर्मक हैं। सकर्मक क्रियाओ में उरपा भिलाली बोली में काय, कुणीक, कुण आदि प्रश्न करने से होती हैं। यदि कुछ उत्तर मिले तो समझना चाहिए क्रिया सकर्मक हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली– कुणीक देदु ? ***हिन्दी***– किसे मारा ?
काय खादु ? क्या खाया ?
कुण आवलो ? कौन आया था ?

ढापला भिलाली बोली में कुणकऽ, कायऽ, कां, आदि प्रश्न करने से होती हैं। यदि उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक हैं, जैसे –

ढापला भिलाली बोली– कुणकऽ मार्‌यों ? ***हिन्दी***– किसे मारा?
कायऽ खायों ? क्या खाया?
कां गयों थो ? कहाँ गया था?

अकर्मक क्रियाओं में प्रश्न नहीं किया जाता हैं, जैसे –

उरपा भिलाली बोली– जीव घाबराय। हिन्दी– जी घबराता हैं।
चुं खाय। वह खाता हैं।

ढापला भिलाली बोली – जी घबराय। हिन्दी– जी घबराता हैं।
वा खाय। वह खाता।

बारेली बोली में क्रिया रूप – बारेली बोली की तीनों बोलियों में संबोधन तु के द्वारा ही होता हैं। लेकिन बड़े एवं सम्माननीय व्यक्तियों के लिए बारेला की राठ्वा बोली एवं बारला बोली में तुमु तथा पाल्या बोली में तमु का प्रयोग होता हैं। समधि, समधिन, सास–ससुर, दामाद, बहू आदि के लिए बारेला, राठ्वा बोली एवं बारला बोली तुमु तथा पाल्या बोली में तमु का प्रयोग होता हैं। बारेली, राठ्वा बोली एवं बारला बोली में न को ण उच्चारित किया जाता हैं। जैसे – कौन का कुण, तथा पाल्या बोली में न के स्थान पर य तथा व का प्रयोग होता हैं। जैसे– कौन का कोय, कहना – केवु, बुलाना – बोलावु आदि। बारेली में हिन्दी के समान ही जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाय उसे क्रिया रूप कहते हैं। हिन्दी में प्रत्येक क्रिया के मूल स्वरूप में ना शब्द लगा होता हैं। उसके स्थान पर बारेली राठ्वा, नो या णो बारेला बोली में नो या णु लगा होता हैं। बारेली पाल्या बोली में वु या वा लगा होता हैं, जैसे –

राठ्वा बोली	पाल्या बोली	बारला बोली	हिन्दी
रोड़णो	रड़वा	रोवणु	रोना
चालणो	चालवु	चालणु	चलना
सुवणो	हुववु	हुवणु	सोना(निंद लेना)
गावणो	गाववु	गावणु	गाना
खेलणो	खेलवु	खेलणु	खेलना
भोंड़णो	भंणवु	भोवणु	पढ़ना
हॉसणो	होहवु	हासणो	हँसना
पीणो	पीवु	पीणो	पीना
खाणो	खावु	खाणो	खाना
जाणो	जवु	जाणो	जाना
कोमायणो	कमावु	कोमायणो	कमाना
आवणो	आववु	आवणो	आना

बारेली में भी हिन्दी के समान रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद दो हैं –

(१) सकर्मक क्रिया (२) अकर्मक क्रिया

(१) सकर्मक क्रिया –जिस क्रिया का कर्म हो वह सकर्मक क्रिया कहलाती हैं, जैसे –

राठ्वा बोली– मोहन गुण्डु खेले। हिन्दी– मोहन गेंद खेलता हैं।
चुं भोंणे । वह पढ़ता हैं।
पाल्या बोली– इयो भंणे। हिन्दी– वह पढ़ता हैं।
मोहन गुण्डो खेले। मोहन गेंद खेलता हैं।

राठ्वा बोली में गुण्डु खेले। में खेल क्रिया का कर्म गुण्डु हैं। इसी प्रकार से पाल्या बोली में गुण्डो क्रिया का कर्म हैं। अतः यह सकर्मक क्रिया हैं। सकर्मक क्रिया वही होगी जिसमें क्या का उत्तर मिल जाय, जैसे – बारेली राठ्वा बोली एवं बारला बोली में मोहन ''काय'' खेले?(मोहन क्या खेलता हैं?) गुण्डु (गेंद) इसी प्रकार से बारेली पान्या बोली में मोहन हूं खेले?(मोहन क्या खेलता हैं?) गुण्डो (गेंद)

बारला बोली – मोहन गुण्डु खेले। हिन्दी– मोहन गेंद खेलता हैं।
चुं भोंणे। वह पढ़ता हैं।

(२) अकर्मक क्रिया – हिन्दी के समान ही बारेली में भी जिस क्रिया का कोई कर्म ना हो उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं, जैसे –

राठ्वा बोली– राम सुवे। हिन्दी– राम सोता हैं।

इसमें सुवे क्रिया अकर्मक हैं। राम कर्ता हैं, सुवे की क्रिया उसी के द्वारा पूर्ण होती हैं। अतः सुवे का फल भी उसी पर पड़ता हैं। इसलिए सुवे क्रिया अकर्मक हैं,जैसे–पाल्या बोली – राम हुवे। हिन्दी– राम सोता हैं।

इसमें हुवे की क्रिया अकर्मक हैं,राम कर्ता हैं, हुवे की क्रिया उसी के द्वारा पूर्ण होती हैं। अतः हुवे का फल भी उसी पर पड़ता हैं। इसलिए हुवे क्रिया अकर्मक हैं।

बारला बोली– श्याम रोड़े। हिन्दी–श्याम रोता हैं।

इसमें रोड़ें क्रिया अकर्मक हैं श्याम कर्ता हैं, रोड़े की क्रिया उसी के द्वारा पूर्ण होती हैं। अतः रोड़े का फल भी उसी पर पड़ता हैं। इसलिए रोड़े क्रिया अकर्मक हैं। सकर्मक क्रियाओ में बारेली राठ्वा बोली में काय, कुणीक, कुण आदि प्रश्न करने से होती हैं। यदि कुछ उत्तर मिले तो समझना चाहिए क्रिया सकर्मक हैं, जैसे –

राठ्वा बोली– कुणीक देदु? हिन्दी–किसे मारा?
काय खादु? क्या खाया?
कुण आवलो? कौन आया था?

बारेली पाल्या बोली में हूं कोयने, कों, आदि प्रश्न करने से होती हैं। यदि उत्तर मिल तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक हैं, जैसे –

पाल्या बोली– कोयने दिदु? हिन्दी– किसे मारा?
हूं खादु? क्या खाया?
कों जेलो? कहाँ गया था?

ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-1, July-2013

इसी प्रकार से बारेली बारला बोली में कुणिक, काय, कां आदि प्रश्न करने से होती हैं। यदि उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक हैं।

बारला बोली	कुणिक देदु?	हिन्दी–किसे मारा?
	काय खाद्‌यु?	क्या खाया?
	कां गोयलु?	कहाँ गया था?

अकर्मक क्रियाओं में प्रश्न नहीं किया जाता हैं, जैसे –

राठ्‌वा बोली –जीव घाबराय।	हिन्दी–	जी घबराता हैं।
चुं खाय।		वह खाता हैं।
पाल्या बोली –जीव घबराये।		जी घबराता हैं।
तीयो खाय।		वह खाता हैं
बारला बोली –जीव गाबराय।	हिन्दी–	जी घबराता हैं।
चुं खाय।		वह खाता हैं।

निष्कर्ष –

भिलाली एवं बारेली एक संपूर्ण संस्कृति की बोली हैं। बोली में संस्कृति की सुक्ष्मातिसुक्ष्म अभिव्यक्ति छिपी होती हैं। बोली संस्कृति की संवाहक होती हैं, इसके पीछे संस्कृति का बल होता हैं, जिस बोली में संस्कृति का बल होता हैं। वह हर समय जीवित होती हैं। उसमें अपने समय के साथ की समग्र क्षमता होती हैं। वह निरंतर प्रवाह को बनाये रखने में सक्षम होती हैं। इन बोलियों में यह शक्ति भी रही हैं कि लोक कण्ठो की लचीली ग्राहयता ने उन्हें हर समय में नई ताजगी और स्फूर्ति बनाये रखने की सामर्थ्य दी हैं। बड़ी तेज गति से हो रहे इस परिवर्तन परिवेश में कहीं ये बोलियाँ अपना अस्तित्व न खो दे। जो बोलियाँ अपने समय के साथ सामंजस स्थापित नहीं किया वे समय और समाज दोनों से बाहर होने की प्रक्रिया में चली जाती हैं। अतः इन बोलियों को समय रहते बचाया नहीं गया तो इनके लुप्त होने का खतरा सदैव बना रहेगा। यह़ शोध पत्र सर्वे एवं साक्षात्कार पर आधारित तथा पुर्णतः मौलिक है।

व्यक्तिवाचक संदर्भ सूची –

1.प्रेम कुमार ब्राहम्णे, सेंधवा रोड़ निवाली जिला बड़वानी म.प्र.
2.गारसिंह आर्य, 440 शिव सीटी आय.पी.एस. अकेडेमी के पीछे, इन्दौर–452012 म.प्र.
3.प्रवीण सोलंकी, ग्राम चाटली तहसील निवाली जिला बड़वानी म.प्र.
4.तेजासिंह चौहान, ग्राम कुंजरी तहसील निवाली जिला बड़वानी म.प्र.
5.मेहताबसिंह सोलंकी कालीबावड़ी तहसील मनावर जिला धार म.प्र.
6.अशोक वास्कले ग्राम वाक्या तहसील सेंधवा जिला बड़वानी म.प्र.
7.धरमसिंह वास्कले ग्राम वाक्या तहसील सेंधवा जिला बड़वानी म.प्र.
8.प्रो. बी.एस. सेनानी, शास. महाविद्यालय,सनावद जिला खरगोन म.प्र.
9.रविन चौहान, ग्राम केवड़ी तहसील पानसेमल जिला बड़वानी म.प्र.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium   Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net